Mahadurga Shulini Paryoga

महादुर्गा शूलिनी मंत्र साधना

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933**,** +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

माँ जगदम्बा के छः मुख्य स्वरूपों में (अग्निदुर्गा, महादुर्गा, जलदुर्गा, वनदुर्गा, शूलदुर्गा एवं शूलिनीदुर्गा) शूलिनीदुर्गा को महाक्रूर माना जाता है। इस महामंत्र से शीघ्र ही षटकर्मों को सिद्ध किया जा सकता है। इस महामंत्र के प्रभाव से क्रूरग्रहों की पीड़ा से साधक की रक्षा होती है। अणिमादि आठ सिद्धियों के साथ चौंसठ कलाओं की भी सिद्धि होती है। युद्धक्षेत्र, शत्रुभय, असाध्य रोग, भूतप्रेत बाधा एवं संकटकाल में महादुर्गा की उपासना त्वरित फल प्रदान करती है। शुक्रवार या सोमवार में सौम्य कर्म एवं मगंलवार

अष्टमी में क्रूर जप व होम करें। परिस्थितिनुसार शक्ति मन्दिर, श्मशान या शान्त स्थान में विधिपूर्वक मंत्र सिद्ध करें। आवश्यक विधान गुरुमुख से प्राप्त करें।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीशूलिनीदुर्गामहामंत्रस्य दीर्घतमा ऋषिः, ककुप् छन्दः, श्रीशूलिनीदुर्गापरमेश्वरीदेवता शूलिनिदुर्गाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अंगन्यास- ॐ शूलिनि दुर्गे हुं फट् - अंगुष्ठाभ्यां नमः - हृदयाय नमः।

ॐ शूलिनि वरदे हुं फट् - तर्जनीभ्यां स्वाहा - शिरसे स्वाहा।

ॐ शूलिनि विंध्यवासिनी हुं फट् - मध्यमाभ्यां वषट् - शिखायै वषट्।

ॐ शूलिन्यसुरमर्दिनी युद्धप्रिये त्रासय हुं फट् - अनामिकाभ्यां नमः हुं - कवचाय हुं।

ॐ शूलिनि देवसिद्धिसुपूजिते नंदिनी रक्षरक्ष महायोगेश्वरि हुं फट् - कनिष्ठिकाभ्यां फट् - अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- अध्यारूढां मृगेन्द्रं सजलजलधरश्यामलां पद्महस्तैः शूलं बाणं कृपाणमरिजलजगदाचापपाशान्वहन्तीम्। चंद्रोत्तंसां त्रिनेत्रां चतसृभिरिरिसिमत्खेटकं बिभ्रतीभिः कन्याभिः सेव्यमानां प्रतिभटभयदां शूलिनीं भावयामि।।

मंत्र-1- 'ॐ ज्वल-ज्वल शूलिनि दुष्टग्रहान् हुं फट् स्वाहा।'

मंत्र-2- 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल-ज्वल शूलिनि दुष्टग्रहान् हुं फट् स्वाहा।'

मंत्र-3- 'श्रीशूलिनि वरदे देवसिद्धि सुपूजिते नन्दिनी रक्ष-रक्ष महायोगेश्वरी हुं फट्।'

मालामंत्र- ''ॐ नमो भगवति कंकालरात्रि दुं दुर्गे शुं शूलिनि बं बटुकभैरवि अर्धरात्र विलासिनि प्रतापकेलिनि महाज्ञानधारिणी सर्वभूतप्रेत पिशाच मद भीषमाकर्षय-2 आवेशय-2 केलय-2 भाषय-2 महाबटुकभैरवि हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवति भद्रकाली कासकूटमोहिनी ऐं ह्रीं श्रीं इष्टकामार्थसिद्धिप्रदायिनि सकलज्ञापिनी संक्रामिणि ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही इन्द्राणी चामुण्डा भैरवेश्वरी आकर्षय-2

आवेशय-2 केलय-2 भाषय-2 ऐं ह्रीं श्रीं हन-हन सप्तमातृके हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवति ह्रीं ज्वल-2 शूलिनि संहारकालि अष्टभुजे शूलिनि ऐहि-2 आगच्छ-2 आवेशय-2 केलय-2 भाषय-2 बन्धय-2 घातय-2 छिन्धि-2 रारारारा ग्राहय-2 सकलग्रहान् संहारय-2 भूतप्रेतग्रह, पिशाचग्रह, ब्रह्मराक्षसग्रह, डाकिनीग्रह, शाकिनीग्रह, काकिनीग्रह, राकिनीग्रह, हाकिनीग्रह, याकिनीग्रह, कालनिग्रह, महाकालनिग्रह, वेशग्रहानावेशग्रह, स्वप्नग्रह, भोगग्रहापस्मारग्रह, नित्यग्रह, सर्वग्रहान् संहारय-2 उच्चाटय-2 नाशय-2 मारय-2 शोषय-2 दह-2 पच-2 भक्षय-2 खण्डय-2 खड्गेन छिन्धि-2 शूलेन ताडय-2 पाशेन बन्धय-2 अनलेन दह-2 ह्रीं दुर्गे बटुकभैरवि सकलग्रहसंहारकारिणी भूतज्वर, प्रेतज्वर, पिशाचज्वर, राक्षसज्वर, पित्तज्वर, वातज्वर, श्लैष्मिकज्वर, सन्निपातज्वरैकाहिकज्वर, द्याहिकज्वर, त्र्याहिकज्वर, चातुर्थिकज्वर, पक्षज्वर, मासज्वर, त्रिमासज्वर, षण्मासज्वर, सांवत्सरिकज्वर, सर्वज्वरान् भंजय-2 कटिशूल, कुक्षिशूलांगशूल, पार्श्वशूल, पृष्ठशूल, शिरःशूलाहिसर्वरोगान् संहारय-2 ह्रीं दुर्गे परमंत्रपरयंत्रपरतंत्र विद्यास्तम्भिनि स्वमंत्र स्वयंत्र स्वतंत्र विद्याविवर्धिनी ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् स्वाहा।"

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि सर्वकामफलप्रदा। इति जपं निवेद्य उत्तरन्यासं कृत्वा यथाशक्त्या प्रजप्य स्तुवीत् ।

श्रीशूलिनीदुर्गा सुमुखीकरण स्तोत्रम्

भगवती शूलिनी दुर्गा के दिव्य स्तोत्र के नित्य पाठ से समस्त बाधाओं से मुक्ति मिलती है, धन एवं ऐश्वर्य का आगमन होता है। पाठ से पूर्व 'ॐ सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हु फट्' मंत्र को तीन बार पढ़कर विधिवत् देवी को बलि प्रदान करें।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीसुमुखीकरण स्तोत्रमंत्रस्य दीर्घतमा ऋषिः, ककुप् छन्दः, श्रीशूलिनी देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- श्रीदीर्घतमा ऋषये नमः शिरासि। ककुप्छन्दसे नमः मुखे। शूलिनी देवतायै नमः हृदि। तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

ध्यानम्- ध्यायेद्धेम सहोपलासन परेकन्या जनालंकृते। पंचब्रह्म मुखामरैर्मुनिगणैः सेव्ये जगन्मंगले। आसीनां स्मितभाषणां शिवसखीं

कल्याण वेषोज्ज्वलाम्। भक्ताभीष्टवर प्रदान निरतां विश्वात्मिकां शूलिनीम्।।

स्तोत्रम्- प्रत्येक श्लोक से पूर्व 'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रयौं दुं' का उच्चारण करें-

ओंकार पीठमध्यस्थे ओषाधीश महोज्जवले। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।1।

श्रीपूर्णे श्रीपरे श्रीशे श्रीपदे श्रीविवर्धने। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।2।

कामेशि कामरसिके कामितार्थ फलप्रदे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।3।

मायाविलास चतुरे माये मायाधिमायिके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।4।

ॐ चिन्तामणेऽखिलाभीष्ट सिद्धिदे विश्वमंगले। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।5।

सर्वबीजाधिपे सर्वसिद्धिदे सर्वरूपिणी। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।6।

ज्वलत् तेजस्रयानन्त कोटि–कोटि समद्युते। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।7।

लसच्चन्द्रार्ध मुकुटे लयजन्मविमोचिके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।8।

ॐ ज्वररोगमुखापत्ति भंजनैक धुरन्धरे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।9।

लक्ष्यलक्ष्ये लयातीते लक्ष्मीवर्गधरेक्षणे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।10।

शूरांगनाऽनन्त कोटि व्यावृताशेष जालके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।11।

पिपीलिंगादिदिक् स्थान नियताराधन प्रिये। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।12।

निर्मले निर्गुणे नित्ये निष्कले निरुपद्रवे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।13।

दुर्गे दुरितसंहारे दुष्टतूलान्त्य पावके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।14।

टमामये टमामेव्ये टमावर्धन तत्परे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।15।

ग्रसिताशेष भुवने ग्रन्थिसन्ध्यर्ण शोभिते। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।16।

हंस तार्क्ष्य वृषारूढैराराधित पदद्वये। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।17।

हुंकारकाल दहन भस्मीकृत जगत्त्रये। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।18।

फट्कारचण्ड पवनोद्धासिताखिल विग्रहे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।19।

स्वाकृते स्वामि पादाब्ज भक्तानां स्वाभि-वृद्धये। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।20।

हालाहल विषाकार हाटकारुण पीठके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।21।

मूलादि ब्रह्मरन्ध्रान्तं मूलज्वाला स्वरूपिणि। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।22।

वषडादि क्रिया षट्क महासिद्धिप्रदे परे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।23।

सर्वविद्वन्मुखाम्भोज दिवाकर समुद्युते। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।24।

नाना महीप हृदय नवनीत द्रवानले। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।25।

अशेष ज्वर सर्पादि चन्द्रोपल शशिद्युते। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।26।

महापापौघ कलुष क्षालनामृत वाहिनि। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।27।

अशेष काय सम्भूत रोग तूलननाऽऽकृते। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।28।

औषधि कोटि दावाग्नि शान्ति सम्पूर्ण वर्षिणि। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।29।

तिमिराराति संहार दिवानाथ शताकृते। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।30।

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

सुधाग्र जिह्वाऽऽवर्त्यग्र सुदीपे विश्व वाक्प्रदे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।31।

अरात्यवनि पानीक तूलोच्चाट महानिले। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।32।

समस्त मृत्यु तुहिन सहस्र किरणोपमे। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।33।

जगत् सौभाग्य फलदे जंगम स्थावरात्मिके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।34।

सुभक्त हृदयानन्द सुख सम्वित् स्वरूपिणी। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।35।

धनधन्याब्धि सम्वृद्धि चन्द्रकोटि समोदयेः। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।36।

सर्वजीवात्मधेन्वग्र समुच्यानिल वत्सके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।37।

तेजःकण महावीर समावीतान्त्य पावके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।38।

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

नाना चराचराविष्ट दाहोपशमनामृते। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।39।

सर्वकल्याण कल्याणे सर्वसिद्धि विवर्धने। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।40।

सर्वेशि सर्वहृदये सर्वाकारे निराकृते। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।41।

अनन्तान्त जनके अभूते आत्मानायिके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।42।

रहस्याति रहस्यात्म रहस्यागम पालके। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।43।

आचार करणातीते आचार्य करुणामये। ऐश्र्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।44।

सर्वरक्षाकरे भद्रे सर्वरक्षा करेऽतुले। ऐश्वर्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।45।

सर्वलोके सर्वदेशे सर्वकाले सताम्बिके। ऐश्र्यमायुरारोग्यमिष्ट सिद्धिं च देहि मे।46।

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

आद्येऽनादि कलाविशेष विवृतेऽनन्ताखिलात्माकृते। आचार्याङ्घ्रि सरोज युग्म शिरसामापूरिताशाऽमृते। संसारार्णव तारणोद्यत कृपा सम्पूर्ण दृष्ट्यानिशम्। दुर्गे शूलिनि शंकरि स्नपय मां त्वं भाव संसिद्धये नमः ।47।

फलश्रुति- इति परमशिवाया सुमुखी महाशक्त्याः स्तुतिमतिशय सौख्य प्राप्तये यो नु वाऽत्र।

स्मरति जपति विद्वत् सम्वृतोऽशेषलोकैः निखिलसुखमवाप्य श्रीशिवाकारमेति।।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

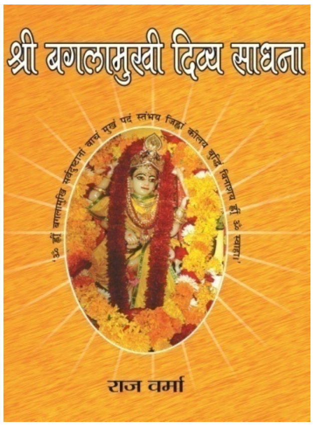

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413